प्रथम विश्व युद्ध 1914 का तात्कालिक कारण

प्रो. सतीश चन्द्र पाण्डेय

प्रथम विश्वयुद्ध के विस्फोट से यूरोप में महाशक्तियों के दो गुट बन गये। प्रथम विश्व युद्ध (First world war)20 वी. शताब्दी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना थी। 28 जुलाई 1914 को शुरू हुए प्रथम विश्वयुद्ध में एक तरफ जर्मनी, आस्ट्रिया,इटली और टर्की थे तथा दूसरी ओर फ्रांस,रूस और इंग्लैण्ड थे।

प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण

औद्योगिक क्रांति के कारण सभी बड़े देश ऐसे उपनिवेश चाहते थे, जहाँ से वे कच्चा माल पा सकें और सभी उनके देश में बनाई गई मशिनों से बनाई हुई चीज़ें बेच सकें। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर देश दूसरे देश पर साम्राज्य करने कि चाहत रखने लगा और इस के लिये सैनिक शक्ति बढ़ाई गई । गुप्त कूटनीतिक संधियाँ की गईं।गुप्त संधियों की प्रणाली का जनक बिस्मार्क(Bismarck) था |

इससे राष्ट्रों में अविश्वास और वैमनस्य बढ़ा और युद्ध अनिवार्य हो गया। ऑस्ट्रिया के सिंहासन के उत्तराधिकारी आर्चड्युक फर्डिनेंड(Archduke Ferdinand) और उनकी पत्नी का वध इस युद्ध का तात्कालिक कारण था।

यह घटना 28 जून 1914, को सेराजेवो (seraajevo)में हुई थी। एक माह के बाद ऑस्ट्रिया ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध घोषित किया। रूस, फ़्रांस और ब्रिटेन ने सर्बिया की सहायता की और जर्मनी ने आस्ट्रिया की। अगस्त में जापान, ब्रिटेन आदि की ओर से और कुछ समय बाद उस्मानिया, जर्मनी की ओर से, युद्ध में शामिल हुए।

प्रथम विश्व युद्ध के कारण

प्रथम विश्व युद्ध के चार मुख्य कारण हैं. इन कारणों को MAIN के रूप में याद रखा जाता है. इस शब्द में M मिलिट्रीज्म, A अलायन्स सिस्टम, I इम्पेरिअलिस्म और N नेशनलिज्म के लिए आया है.

मिलिट्रीज्म :

मिलिट्रीज्म में हर देश ने ख़ुद को हर तरह के आधुनिक हथियारों से लैस करने का प्रयास किया. इस प्रयास के अंतर्गत सभी देशों ने अपने अपने देश में इस समय आविष्कार होने वाले मशीन गन, टैंक, बन्दुक लगे 3 बड़े जहाज़, बड़ी आर्मी का कांसेप्ट आदि का आविर्भाव हुआ. कई देशों ने भविष्य के युद्धों की तैयारी में बड़े बड़े आर्मी तैयार कर दिए. इन सभी चीज़ों में ब्रिटेन

Prof. Satish Chandra Pandey

और जर्मनी दोनों काफ़ी आगे थे. इनके आगे होने की वजह इन देशों में औद्योगिक क्रांति का बढ़ना था. औद्योगिक क्रान्ति की वजह से यह देश बहुत अधिक विकसित हुए और अपनी सैन्य क्षमता को बढाया. इन दोनों देशों ने अपने इंडस्ट्रियल कोम्प्लेक्सेस का इस्तेमाल अपनी सैन्य क्षमता को बढाने के लिए किया, जैसे बड़ी बड़ी विभिन्न कम्पनियों में मशीन गन का, टैंक आदि के निर्माण कार्य चलने लगे. इस समय विश्व के अन्य देश चाहते थे कि वे ब्रिटेन और जर्मनी की बराबरी कर लें किन्तु ऐसा होना बहुत मुश्किल था. मिलिट्रीज्म की वजह से कुछ देशों में ये अवधारणा बन गयी कि उनकी सैन्य क्षमता अति उत्कृष्ट है और उन्हें कोई किसी भी तरह से हरा नहीं सकता है. ये एक ग़लत अवधारणा थी और इसी अवधारणा के पीछे कई लोगों ने अपनी मिलिट्री का आकार बड़ा किया. अतः मॉडर्न आर्मी का कांसेप्ट यहीं से शुरू हुआ.

विभिन्न संधीयाँ यानि गठबंधन प्रणाली :

यूरोप में 19वीं शताब्दी के दौरान शक्ति में संतुलन स्थापित करने के लिए विभिन्न देशों ने अलायन्स अथवा संधियाँ बनानी शुरू की. इस समय कई तरह की संधियाँ गुप्त रूप से हो रही थी. जैसे किसी तीसरे देश को ये पता नहीं चलता था कि उनके सामने के दो देशों के मध्य क्या संधि हुई है. इस समय में मुख्य तौर पर दो संधियाँ हुई, जिसके दूरगामी परिणाम हुए. इन दोनों संधि के विषय में दिया जा रहा है,

साल 1882 का ट्रिपल अलायन्स :

साल 1882 में जर्मनी ऑस्ट्रिया- हंगरी और इटली के बीच संधि हुई थी. साल 1907 का ट्रिपल इंटेंट : साल 1907 में फ्रांस, ब्रिटेन और रूस के बीच ट्रिपल इंटेंट हुआ. साल 1904 में ब्रिटेन और रूस के बीच कोर्दिअल इंटेंट नामक संधि हुई. इसके साथ रूस जुड़ने के बाद ट्रिपल इंटेंट के नाम से जाना गया. यद्यपि इटली, जर्मनी और ऑस्ट्रिया- हंगरी के साथ था किन्तु युद्ध के दौरान इसने अपना पाला बदल लिया था और फ्रांस एवं ब्रिटेन के साथ लड़ाई लड़नी शुरू की.

साम्राज्यवाद :

इस समय जितने भी पश्चिमी यूरोप के देश हैं वो चाहते थे, कि उनके कॉलोनिस या विस्तार अफ्रीका और एशिया में भी फैले. इस घटना को 'स्क्रेम्बल ऑफ़ अफ्रीका' यानि अफ्रीका की दौड़ भी कहा गया, इसका मतलब ये था कि अफ्रिका अपने जितने अधिक क्षेत्र बचा सकता है बचा ले, क्योंकि इस समय अफ्रीका का क्षेत्र बहुत बड़ा था. यह समय 1880 के बाद का था जब सभी बड़े देश अफ्रीका पर क़ब्ज़ा कर रहे थे. इन देशों में फ्रांस, जर्मनी, होलैंड बेल्जियम आदि थे. इन सभी देशों का नेतृत्व ब्रिटेन कर रहा था. इस नेतृत्व की वजह ये थी कि ब्रिटेन इस समय काफ़ी सफ़ल देश था और बाक़ी देश इसके विकास मॉडल को कॉपी करना चाहते थे. पूरी दुनिया के 25% हिस्से पर एक समय ब्रिटिश शासन का राजस्व था. इस 25% क्षेत्र की वजह से इनके पास बहुत अधिक संसाधन आ गये थे. इसकी वजह से इनकी सैन्य क्षमता में भी खूब वृद्धि हुई. इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारत से 13 लाख सैनिकों ने प्रथम विश्व युद्ध में लड़ाई लड़ने के लिए भेजे गये. ब्रिटेन आर्मी में जितनी भारतीय सेना थी, उतनी ब्रिटेन सेना नहीं थी.

Prof. Satish Chandra Pandey

राष्ट्रवाद :

उन्नसवीं शताब्दी मे देश भक्ति की भावना ने पूरे यूरोप को अपने कब्जे में कर लिया. जर्मनी, इटली, अन्य बोल्टिक देश आदि जगह पर राष्ट्रवाद पूरी तरह से फ़ैल चूका था. इस वजह से ये लड़ाई एक ग्लोरिअस लड़ाई के रूप मे भी सामने आई और ये लड़ाई 'ग्लोरी ऑफ़ वार' कहलाई. इन देशों को लगने लगा कि कोई भी देश लड़ाई लड़ के और जीत के ही महान बन सकता है. इस तरह से देश की महानता को उसके क्षेत्रफल से जोड़ के देखा जाने लगा.

प्रथम विश्वयुद्ध के पहले एक पोस्टर बना था, जिसमे कई देश एक दुसरे के पीछे से प्रहार करते हुए नज़र आये. इसमें साइबेरिया को सबसे छोते बच्चे के रूप में दिखाया गया. इस पोस्टर में साइबेरिया अपने पीछे खड़े ऑस्ट्रिया को कह रहा था यदि तुम मुझे मारोगे तो रूस तुम्हे मारेगा. इसी तरह यदि रूस ऑस्ट्रिया को मरता है तो जर्मनी रूस को मारेगा. इस तरह सभी एक दुसरे के दुश्मन हो गये, जबकि झगड़ा सिर्फ साइबेरिया और ऑस्ट्रिया के बीच में था.

प्रथम विश्व युद्ध एवं भारत

प्रथम विश्वयुद्ध का समर्थन तत्कालीन भारत की राजनीतिक पार्टियां जैसे कांग्रेस, मुस्लिम लीग,मॉडरेट, नेशनलिस्ट राजे-रजवाङे आदि ने किया।

उदारवादी भारतीय नेताओं ने इस आशा में ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठावान और ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का समर्थन किया कि उनके सहयोग के बदले में उनकी स्वराज या स्वशासन की मांग को पूरा कर दिया जायेगा। राष्ट्रवादी नेता तिलक और गांधी जी ने युद्ध के दिनों में सरकार की सहायता हेतु धन और सेना के लिए सिपाही की व्यवस्था हेतु गांवों का दौरा किया। लार्ड हार्डिंग (वायसराय) की बुद्धिमता एवं सहानुभूतिपूर्ण रवैये के कारण प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन को भारत का पूर्ण समर्थन मिला।

प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार द्वारा टर्की (मुस्लिम) के विरुद्ध युद्ध की घोषणा से मुस्लिम लीग का सरकार के प्रति मोह भंग हो गया। अब लीग कांग्रेसी नेताओं के अधिक नजदीक आने का प्रयास करने लगी। हकीम अजमल खां, मोहम्मदअली, हसन इमाम जैसे एहरार आंदोलन से जुङे नेताओं ने मुसलमानों को अब सरकार की चाटुकारिता बंद करने को कहा और आह्वान किया कि वे राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लें।

प्रथम विश्व युद्ध से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य

प्रथम विश्व युद्ध (First World War) की शुरुवात 28 जुलाई 1914 को ऑस्ट्रिया द्वारा सर्बिया पर आक्रमण किये जाने के साथ हुयी |

Prof. Satish Chandra Pandey

प्रथम विश्व युद्ध चार वर्षो (1914-1918) तक चला , जिसमे 37 देशो ने भाग लिया

प्रथम विश्वयुद्ध (First World War) में सम्पूर्ण विश्व दो खेमो में बंट गया था मित्र राष्ट्र और धुरी राष्ट्र ।धुरी राष्ट्रों का नेतृत्व जर्मनी ने किया | इसमें शामिल अन्य देश थे – ऑस्ट्रिया ,हंगरी और इटली आदि |

मित्र राष्ट्रों में इंग्लैंड , जापान ,संयुक्त राज्य अमेरिका ,रूस और फ्रास शामिल थे |

ऑस्ट्रिया ,जर्मनी एवं इटली के बीच त्रिगुट का निर्माण 1882 ईस्वी में हुआ था |प्रथम विश्व युद्ध (First World War) के समय अमेरिका का राष्ट्रपति वुडरो विल्सन था |

अमेरिका 6 अगस्त 1917 को प्रथम विश्व युद्ध में शामिल हुआ

प्रथम विश्व युद्ध के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा मिलिट्री पॉवर बनकर उभरा |

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति 11 नवम्बर 1918 को हुयी थी |

18 जून 1919 को पेरिस में शान्ति सम्मेलन हुआ , जिसमे 27 देश भाग ले रहे थे मगर शान्ति संधियों की शर्ते केवल तीन देश ब्रिटेन ,फ़्रांस और अमेरिका तय कर रहे थे |

पेरिस शान्ति सम्मेलन में शान्ति संधियों की शर्ते निर्धारित करने में जिन राष्ट्राध्यक्ष ने मुख्य भूमिका निभाई वे थे अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ,ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लोयड जोर्ज और फ्रास के प्रधानमंत्री जोर्ज क्लेम्सो |

वर्साय की संधि 28 जून 1919 को जर्मनी के साथ हुयी | युद्ध के हर्जाने के रूप में जर्मनी से 6 अरब 50 करोड़ पौंड राशि की मांग की गयी | अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रथम विश्व युद्ध का सबसे बड़ा योगदान राष्ट्रसंघ की स्थापना थी | प्रथम विश्व युद्ध (First World War) के दौरान होने वाली वर्साय की संधि (treaty of Versailles)में द्वितीय विश्व युद्द का बीजारोपण हुआ।

Reference :

Prof. Satish Chandra Pandey

1-https://www.indiaolddays.com/

2-http://etext.lib.virginia.edu/bsuva/sb/Archived 2012-04-14 at the Wayback Machine

3- Americanliterature. American Literary History, 29(2), 331-351.

3- Otlet, P. (1903). Lessciences bibliographiquesetdocumentation. Bruxelles, Institut international de bibliographie.

4- Otlet, P. (1903). "The science of bibliography and documentation"2. In Rayward, W.B. (trans. and ed.), (1990), International organisation and dissemination of knowledge:

5- McKenzie, D. F

(1999). Bibliography and the Sociology of Texts. Cambridge: Cambridge University Press.

6- Gow, A. S. F. A. E. Housman: A Sketch.Cambridge: Cambridge University Press, 2011.

7- Fredson Bowers, "Four Faces of Bibliography" Papers of the Bibliographical Society of Canada 10 (1971):33-4.

8- Philip Gaskell, A New Introduction to Bibliography (2000)

Prof. Satish Chandra Pandey